यीशु हमारे महान् राजा आपकी आज्ञा हम पालन करें।

हम विश्वासी यीशु की आज्ञाओं को मानते हैं क्योंकि हम उससे प्रेम करते हैं।

बच्चों के शिक्षकगणों को इस अध्ययनमाला से **A1b** पढ़ना चाहिये

प्रार्थना : "यीशु परमेश्वर आप हम सबके लिये मरे, फिर जीवित हुए और महिमा में उठा लिये गये। मेरा शिष्य वृन्द और मैं आपसे प्रेम करते हैं। हमें सिखायें की हम प्रेम पूर्वक आपकी आज्ञाओं को मानकर आपकी सेवकाई कर सकें।"

1. आज्ञाकारिता सीखाने के लिए अपने आप को प्रार्थना और परमेश्वर के वचन से तैयार करें।

स्तिफनुस के लेखे से सीखें कि आपके शिष्य वृन्द को आज्ञाकारिता किस प्रकार दृढ़ करती है और सताव में कैसे खड़े रहने में हमारी मदद करती है, दुखों और तिरस्कार में भी। स्तिफनुस सबसे पहला विश्वासी था जो प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानने से शहीद हुआ और उसने जो किया उसका साक्षी बना। (प्रेरितो के काम 1:8)

प्रेरितो के काम 7:54-8:8 में देखें...

- परमेश्वर का आशिष जो स्तिफनुस को भर दिया।
- वह क्या देखने में समर्थ था?
- किस विषय पर उसने साक्षी दी।
- उसने क्या प्रार्थना की।
- विश्वासी जहाँ कहीं जाते थे क्या आरम्भ करते थे।

यहून्ना 14:15-21 में देखें...

- विश्वासियों ने यीशु मसीह के प्रति कैसे प्रेम प्रकट किया।
- यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने वाले का लाभ।

इब्रानियों 5:8-9 में देखें...

- यीशु मसीह स्वयं आज्ञा मानना कैसे सीखे?
- यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने वाले का लाभ।

1 यहून्ना 2:3-4 में देखें...

- हम कैसे निश्चित हो सकते हैं कि हम यीशु को जानने आये हैं।
- यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने वाले का लाभ।

1 पतरस 1:2 में देखें.....

- हम कैसे जान सकते हैं कि परमेश्वर ने हमें चुना है ताकि हम उसने हो।
- यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने वाले का लाभ।

प्रेरितो के काम 5:27-32 में देखें....

- हम लोगों को किस प्रकार साहस मिल सकता है विरोधी अधिकारियो को सच्चाई पूर्ण उत्तर देने का।
- यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने वाले का लाभ।

मत्ती 28:16-20 में देखें

- यीशु मसीह ने अपनी अन्तिम आज्ञा कितना अधिकार से दिया है।
- यीशु ने हमें कैसे आज्ञा दी है कि दूसरों की मदद करे यीशु के चेले बनाने में।
- यीशु मसीह की आज्ञाओ को मानने में जो सहायता करते हैं उनके लाभ होता है।

1 पतरस 1:13-22 में देखें....

- आज्ञाकारी मसीही उस संसार में किस प्रकार का जीवन व्यतीत करते हैं।
- जो प्रभु यीशु की आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें कैसे लाभ मिलता है।

प्रकाशितवाक्य 14:12-13 में देखें.....

- अन्त तक मसीही लोग किस प्रकार यीशु मसीह के विश्वास पात्र रह सकते हैं।
- जो प्रभु यीशु के पास आते और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं उन्हें कैसे लाभ होता है।

निम्नलिखित आयतों में जो बाई ओर लिखी हुई है देखें, उनमें कुछ यीशु की आज्ञायें वे हैं जिन्हें नये विश्वासी येरूशलेम में जाकर एक दम अभ्यास करना शुरु करते हैं (प्रेरितो के काम 2:38-47) हर एक आयत की एक लाईन से दूसरों ओर की क्रियायें जो दाहिनी ओर हैं मिलायें (लाईन खीचकर)

लूका 22:19-20	**संगति में प्रेम**
यहून्ना 13:34	**रोटी तोड़ना**
लूका 6:38	**बपतिस्मा देना**
मत्ती 28:19-20	**यीशु के नाम से प्रार्थना**
यहून्ना 16:26	**दिया करो (देना)**

2. **सप्ताह के दौरान अपने सहकर्मियों के साथ जो कार्यक्रम योजना बनायें। बनाने है उसकी।**
   जो आपकी ज़रूरत हो उसी क्रिया को चुने। शायद आप

- उन विश्वासियों के पास जायें जो तंगी में है, और जेलों में हैं उनके विश्वास की वजसे है, उन्हें साहस जुटाने में प्रभु के वचन, बाईबल से जो भाम 1 में हैं पढ़कर सुनायें।
- अपने सताने वाले का नाम लेकर प्रार्थना करें जिससे परमेश्वर उसे आशीष दे और अपनी पहचान उसको प्रकट करो।
- बात चीत करें कि विश्वासियों ने सताव के बाद कैसे बर्ताव किया और आप उन्हें कैसे सिखायेंगे की वे यीशु मसीह के आज्ञाकारी रहें। इकठ्ठे समय व्यतीत करें, परमेश्वर की आराधना करें और उससे कहें कि हमें ताकत दी जिये जिससे हम आज्ञाकारी रहें।

3. आराधना समय को सुनियोजित बनाने के लिए अपने सहकर्मियों के साथ योजना बनायें।

उन क्रियाओं को चुने जो वहाँ की सभ्यता को और ज़रूरत को पूरी कर सके।

दुबारा से पुनरीक्षण करें या स्तिफनुस के शहीद होने का वृत्तान्त नाटक के रूप में प्रस्तुत करे। पढे प्रेरितो के काम 7:51-8:8 को पढ़कर।

भाग 1 में दी गई बाईबल की आयतों को विश्वासियों के संग मिल दुबारा देखें। जो कुछ आपने पाया है उस पर प्रश्न पूछें। प्रोत्साहित करें बात चीत करने के लिये। अगर वे लोग ठीक प्रकार से प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाते तो उन्हें ठीक उत्तर बतायें।

विश्वासियों से कहें कि अपनी गवाहियाँ या रिर्पोट प्रस्तुत करें कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे आशिषित किया जब पिछले माह उन्होंने यीशु मसीह की आज्ञाओं में से कुछ को माना।

बच्चे परमेश्वर के वचन से तथा नाटक प्रस्तुत करें जो उन्होंने वयस्कों के लिये तैयार किया है।

प्रभु भोज देने से पहले प्रकाशितवाक्य 19:5-10 तक पढ़े जिसमें मेमने के विवाह के भोज का वर्णन है। प्रभु भोज के विषय में समझायें कि किस प्रकार यह यीशु मसीह की ओर आगे बढ़ने में तथा यीशु मसीह के पृथ्वी पर वापिस आने तथ उस बड़े भोज के विषय जिसमें हमें सम्मिलित होना है, सहायता करता है।

छोटे समूह बनायें उन लोगों के जो आराधना करते हैं और उनकी चिन्ताओं और ज़रूरतों के विषय में सुने प्रोत्साहन देने वाले शब्दों को बोले और एक दूसरे के लिये प्रार्थना करें जिससे प्रभु यीशु के आज्ञाकारी रह सकें। और विश्वासियों के शत्रु और सताव करने वालो के लिये प्रार्थना करें।

रोमियों 6:17-18 इकठ्ठे मिलकर याद करें।

Copyright 2004 © by Paul-Timothy. May be freely copied. Download from www.Paul-Timothy.net